Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 1, January-2019, ISSN 2230-7540

भारत में सतत कृषिः चुनोतियां एवम् अवसर

Kavita Tomar*

Research (Geography), School of Social Science, Devi Ahilya World University

सार *– भारत में जनसाधारण के लिए कृषि एक सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण आजीविका क्षेत्र है। अंतरराष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान (IFPRI)" ने वैश्विक भूख पर रिपोर्ट जारी की। उस रिपोर्ट के अनुसार भारत 2017 में पिछले 97 स्थान से 100 तक विस्थापित हो गया है जो हमारे देश के स्थान को गंभीर श्रेणी में दर्शाता है। पड़ोसी देश जैसे नेपाल, बांग्लादेश और श्रीलंका का भूख अंकमान बेहतर हैं। हमारे पडोसी देश श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल का भूख सूचकांक (hunger score) भारत से कम है। भारत जैसे विकासशील देश में सतत विकास के लिए सतत कृषि की मुख्य आवश्यकता है। कृषि की मौजूदा स्थिति और विभिन्न संकेतकों की प्रवृत्ति भारतीय कृषि के भविष्य को दर्शाती है, जो बहुत गंभीर हैं।*

शब्द कुंजी- वैश्विक, विकासशील, सतत विकास, सतत कृषि विकास

-----------------------------------X-----------------------------------

प्रस्तावना

भारत में कृषि सबसे महत्वपूर्ण निजी व्यवसाय है जो आधी से अधिक आबादी को आय और रोजगार का अवसर प्रदान करता है। माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने स्वतंत्रता दिवस के भाषण में किसान कल्याण की आवश्यकता को संबोधित करते हुए कृषि मंत्रालय का नाम बदलकर कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय रखा। कृषि क्षेत्र में सुधार और 2020 तक किसान की आय दोगुनी करने के लिए नीति आयोग द्वारा रोडमैप बनाया गया है। ग्रामीण जनता को आजीविका के साधन उपलब्ध कराने के लिए भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। देश के सकल मूल्य में कृषि क्षेत्र का 17% योगदान है। सतत कृषि विकास के लिए भारत सरकार ने कई कदम उठाए हैं। सिंचाई के कुशल उपयोग और जल दक्षता में वृद्धि के लिए प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना व मृदा की उर्वरता में सुधार के लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना मोजूदा परिस्थियों में सुधार का अच्छा प्रयास है। परम्परागत कृषि विकास योजना के माध्यम से जैविक कृषि प्रणाली का समर्थन किया गया तथा कृषि क्षेत्र में जोखिम को कम करने के लिए एक नयी योजना प्रधानमत्री फसल बीमा योजना का आरम्भ किया तथा 2016 में इसे रबी एवम् खरीफ दोनों की फसलो के लिए क्रियान्वित किया गया। सामाजिक और आर्थिक समानता को बढ़ावा देने के लिए सतत कृषि द्वारा पर्यावरणीय स्वास्थ्य और आर्थिक लाभ को संतुलित करने का प्रयास किया जा रहा है। क्यों कि प्राकृतिक और मानव दोनों ही प्रकार के संसाधनों का बहुत महत्व है। सरल शब्दावली में सतत कृषि में वे प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं जो हमारी सामाजिक आवश्यकताओ जैसे भोजन, रेशे (कपडा), व अन्य आवश्यक वस्तुओ से सम्बंधित संसाधनों की वर्तमान व दीर्घकालिक आवश्यकताओ को पूरा करने में सक्षम हो। आर्थिक भविष्यवाणी के लिए भारत में कृषि क्षेत्र को प्रमुखत जाना जाता है और भविष्य में भी स्थिति यही रहेगी। कृषि क्षेत्र पर निर्भरता कम नहीं हुई है क्योंकि आजादी से भारत की जीडीपी में कृषि क्षेत्रीय योगदान के अनुपात में गिरावट हुई है। क्योंकि कृषि में संलग्न जनसख्या कम हुई है तो साथ ही देश की जीडीपी में कृषि क्षेत्र का योगदान भी कम हुआ है। जनसंख्या की निर्भरता 75% से 58% तक घट गई है, लेकिन साथ ही देश के सकल घरेलू उत्पाद में क्षेत्रीय योगदान 61% से घटकर 17% हो गया। विश्व स्तर पर तुलनात्मक तस्वीर से पता चलता है कि दुनिया की कुल आबादी में हमारी आबादी का हिस्सा 16.8% है परन्तु जल संसाधन और भूमि संसाधन क्रमंश केवल 4.2% और 2.3% हैं। विश्व में संसाधनों की उपलब्धता का औसत हमारे राष्ट्रीय औसत से चार से छह गुना अधिक है। संसाधनों की उपलब्धता, यह स्थिति दो तरह से कृषि क्षेत्र पर दबाव बनाती है।

1. पहला- आबादी की प्राथमिक आवश्यकताओ को पूरा करना

www.ignited.in

2. दूसरा- भूमि उपयोग प्रतिरूप का गैर कृषि कार्यों में स्थानांतरण

वर्तमान फसल की गहनता 136% है जो पिछले साठ साल में 25% बढ़ी है। भूजल संसाधन कृषि के लिए एक प्रमुख जल स्रोत है जो जल निकासी के निम्न स्तर पर है। ये सभी परिस्थितियाँ भारत में कृषि उत्पादकता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। इसलिए, इस कृषि राष्ट्र को अपनी वर्तमान समस्या के साथ-साथ आगामी चुनौतियों के लिए एक स्थायी समाधान की आवश्यकता है। भारतीय कृषि में फसल, जलवायु, प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता के मामले में विभिन्नता अत्यधिक है हमारे पास इसकी प्रकृति का लाभ उठाने और वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने का एक सुनहरा अवसर है। टायर" ने कहा कि प्रतिस्पर्धा के सभी रूपों में सतत कृषि विकास खुद को बचाने का एकमात्र तरीका है।

उद्देश्य

1. सतत कृषि की अवधारणा को विस्तृत रूप में प्रस्तुत करना।
2. विभिन्न आयामों पर भारत की कृषि की वर्तमान स्थिति की जांच करना।
3. भारत कृषि क्षेत्र के समक्ष मौजूदा चुनौतियों की पहचान करना।
4. उपचारात्मक उपाय सुझाना और भारतीय कृषि क्षेत्र के लिए विभिन्न अवसरों को उजागर करना।

साहित्य पुनरवलोकन

L.L. Samantaray ने A Study on the Current Trend of Agriculture Productivity in india and its future prospects: शीर्षक नामक अपने अध्ययन में संरचनात्मक, तकनीकी और संस्थागत नीति सुधारों के बारे में चर्चा की, जो क्रमिक कृषि ¼successive agriculture½ विकास के लिए उत्तरदायी हैं। शोधकर्ता ने द्वातियक आंकड़ों का उपयोग किया जिन्हें कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र से संग्रहित किया और विश्लेषित किया है। उन्होंने भारत में कृषि क्षेत्र की कुछ बड़े दोषों का पता लगाया और सरकार का उन दोषों की ओर ध्यान केन्द्रित कराने का प्रयास किया। यह बताया कि सरकार को विपणन ¼marketing½] मूल्य तंत्र ¼price mechenism½] अनुसंधान और विकास जैसे प्रमुख खंड को प्राथमिकता देना चाहिए। अध्ययन से यह अवलोकन में आयाकि सरकारी और निजी हस्तक्षेप द्वारा सतत विकास प्राप्त किया जा सकता है।

संगीत, सुखपाल सिंह, श्रुति भुगोल (2013) ने अपने शोध अध्ययन को Agriculture for sustainable development of India नाम के शीर्षक सेउल्लेख किया है। उन्होंने कृषि और इसके विभिन्न आयामों जैसे रोजगार सृजन, उत्पादन और उत्पादकता, खाद्यान्न उपलब्धता के बारे में चर्चा की और इनकी तुलना कि कोन- सा आयाम अधिक लाभ प्रदान करता है। अध्ययन से पता चलता है कि 60% से अधिक आबादी कृषि पर निर्भर है जो कि स्तत विकास नहीं है।लेखक का सुझाव है कि सतत कृषि विकास एक लक्ष्य जिसे सिमित संसाधनों का कुशलता से उपयोग करते हुए और पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए प्राप्त करना है।

शोध प्राविधि

यह शोध द्वितीयक आंकड़ो पर आधारित है। अनुसंधान के संचालन के लिए आवश्यक आंकड़े मुख्य रूप से शैक्षणिक पुस्तकालयों, पुस्तकों और पत्रिकाओं, लेखों, सरकारी रिपोर्टों, आर्थिक सर्वेक्षणों, कृषि जनगणना आदि में प्रकाशित स्रोतों से एकत्र किए गए हैं। 2001 से 2018 तक चयनित चर के समय श्रृंखला डेटा का विश्लेषण और उपयोग ¼The time series data of selected variables from 2001 to 2018 have been analysed and used½ किया गया है। अनुसंधान आंकड़ो की जांच और व्याख्या करने के लिए महत्वपूर्ण सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया गया है व विभिन्न उपकरण का उपयोग जैसे प्रतिशत, यौगिक विकास दर ¼compound growth rate½ आदि का उपयोग किया गया है।

सतत कृषि विकास का अर्थ

सतत कृषि विकास का अर्थ- खाद्य फसलो, रेशो, अन्य पोंधो या पशु उत्पादों के उत्पादन में ऐसी कृषि तकनीको का उपयोग करना जो पर्यावरण, मानव समुदाय, पशु और सार्वजनिक स्वास्थ्य इन सभी के कल्याण की दृष्टि से उत्तम हो। 2000 के बाद भारतीय कृषि की प्रगति काफी कम हो गई है साथ ही रोजगार के अवसर और संतोषजनक आय प्राप्ति के मामले में कृषि क्षेत्र अस्थिर प्रतीत होता रहा है। राष्ट्रीय उत्पाद में कृषि का योगदान लगातार कम हुआ है लेकिन कृषि क्षेत्र पर जनसंख्या की निर्भरता जितनी कम हुई है उस से अधिक कृषि क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान कम हुआ है। मूल रूप से कृषि की यही अस्थिरता देश की सामाजिक और आर्थिक समस्याओ का कारण है। भूख, गरीबी और बेरोजगारी ये समस्यांए भी कृषि के अस्थिर कारको के सामान ही देश की अर्थव्यवस्था पर अपना प्रभाव छोडती है। निम्न लिखित

आंकड़ो के माध्यम से देश के तीन प्रमुख क्षेत्रो का सकल घरेलु उत्पाद में योगदान को प्रस्तुत किया गया है।

o"k	कृf"k ,oe mlls lEcfU/kr {ks= dk ldy ?kjsyw mRikn ¼%½	m|kSx {ks= dk ldy ?kjsyw mRikn¼%½	lsok {ks= dk ldy ?kjsyw mRikn¼%½
2000-2001	22.26	27.25	50.98
2001-2002	22.39	26.54	51.99
2002-2003	20.13	27.39	53.13
2003-2004	20.33	27.22	53.25
2004-2005	19.03	27.93	53.05
2005-2006	18.27	27.99	53.74
2006-2007	17.37	28.65	53.98
2007-2008	16.81	28.74	54.45
2008-2009	15.77	28.13	56.11
2009-2010	14.64	28.27	57.09
2010-2011	14.59	27.92	57.48
2011-2012	14.37	28.22	57.42
2012-2013	13.95	27.27	58.79
2013-2014	13.94	26.13	59.93
		(2011-12के स्थिर मूल्य पर)	
2014-15	16.5	31.3	52.2
2015-2016	15.4	31.6	53.0
2016-2017	15.3	31.5	53.2
2017-2018	14.80	31.0	54.2

स्रोत-2007- 2017 का भारत का आर्थिक सर्वेक्षण

देश में सकल घरेलू उत्पाद के तीनो क्षेत्रों के योगदान का अपना अलग-अलग स्थान हैं। 2004-2005 और 2011-12 के स्थिर मूल्य पर देखा गया है कि कृषि क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद में 2000-2018 तक निरंतन महत्वपूर्ण योगदान रहा है। एलपीजी नीति (उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण) और डब्ल्यूटीओ (विश्व व्यापार संगठन) समझौते ने भारतीय कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। औसत भारतीय किसान वैश्विक प्रतिस्पर्धा का मुकाबला नहीं कर सकते हैं। भारत के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि के योगदान को कम करने में सेवा और औद्योगिक क्षेत्र की सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि भी एक कारण है। रोजगार और आय के अवसरों की कमी और कृषि क्षेत्र के व्यावसायीकरण ने लोगों के मूल्य, हित व रूचि को खो दिया हैं। 2012 से 2018 तक विश्व कृषि उत्पाद की कीमते तुलनात्मक रूप से कम रही हैं जिन्हों ने भारत से कृषि निर्यात पर भी प्रभाव डाला हैं। 85% सीमांत किसानो को शुद्ध कृषि लाभ की प्राप्ति नही हो पाती जिस करण उन में कृषि व्यावसाये के प्रति नकारात्मक आने लगी है यह सामूहिक बाधा कृषि क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है और भारत के कुल जीडीपी में कृषि की हिस्सेदारी में गिरावट का कारण बनती है। जीडीपी में कृषि के कम होते हुए प्रतिशत को हम निम्न आरेख से समझ सकते है।

उपरोक्त आंकड़ों में भारत की जीडीपी की क्षेत्रीय संरचना का अध्ययन अवधि के दौरान कृषि, उद्योग और सेवा की हिस्सेदारी का वर्णन किया है। कृषि क्षेत्र की हिस्सेदारी धीरे-धीरे कम होती जा रही है साथ ही अन्य क्षेत्रों की तुलना में भी कम है। बुनियादी ढांचागत विकास की कमी, निवेश की कम दर, पारंपरिक तकनीक का उपयोग, खेती के उचित ज्ञान का आभाव, कृषि मंडी में केवल 6% कृषि उत्पादों को न्यूनतन समर्थन मूल्य ¼MSP½ की प्राप्ति का होना, कृषि उत्पाद के लिए मौजूदा वैश्विक प्रतिस्पर्धा और लाभ के रूप में कृषि क्षेत्र का पिछड़ा होना ये सभी समस्याएं कम विकास या राष्ट्रीय उत्पादों में कृषि की कम भागीदारी का कारण बनती हैं।

भारत में क्षेत्र और खाद्य अनाज उत्पादकता

प्रति बूंद अधिक फसल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिया गया प्राकृतिक संसाधनों के महत्व एवम उत्पादन में प्राक्रतिक संसाधनों की आवश्यकता को उजागर करती है। भारत में खाद्यान्न की उपलब्धता हरित क्रांति के तुरंत बाद बदल गई है। कृषि मंत्रालय ने अपने तीसरे उन्नत अनुमान में खुलासा किया कि कुल खाद्यान्न उत्पादन 279.5 मीट्रिक टन तक पहुंच जाता है और सामान्य मानसून के साथ 2018-19 में 283.8 मीट्रिक टन खाद्यान्न उत्पादन की भी उम्मीद है। परन्तु दूसरी ओर भारत ने पिछले साल 97 से 100 तक वैश्विक भूख सूचकांक में अपनी रैंक को उन्नत किया है। भारत में भूख गंभीर समस्या है, 119 देशों में से हम उत्तर कोरिया, बांग्लादेश और इराक से पीछे हैं। हमारी जनसंख्या की खाद्यान्न की आवश्यकता की पूर्ति के लिए 2025-26 तक 300 मिलियन टन अनाज की आवश्यकता है। 2017-18 में खाद्यान्न उत्पादन का पहले का अनुमान 277.5 मिलियन टन है। इसका तात्पर्य यह है कि फसल उत्पादन को अपने

www.ignited.in

वार्षिक औसत से अधिक बढ़ने की आवश्यकता है। भारत में कुल खाद्यान्न उत्पादन में बदलाव की तुलना की जाये तो खाद्यान्न उत्पादन के क्षेत्र में मामूली वृद्धि ही हुई है। अध्ययन अवधि के दौरान कृषि क्षेत्र की उत्पादक क्षमता में वृद्धि का कारण कृषि की औसत उपज में वृद्धि हुई है। निम्न तालिका में भारत में खाद्य अनाज उत्पादन की वास्तविक स्थिति और खाद्य अनाज उत्पादन के तहत आने वाले क्षेत्र का वर्णन किया किया गया है।

वर्ष	कुल खाद्य अनाज उत्पादन (मिलियन टन)	खाद्य अनाज उत्पादन के तहत आने वाले क्षेत्र (मिलियन हेक्टेयर)
2000-01	196.87	121.05
2001-02	212.85	122.77
2002-03	174.87	113.87
2003-04	213.19	123.045
2004-05	198.36	120.08
2005-06	208.60	121.60
2006-07	217.28	123.70
2007-08	230.78	124.06
2008-09	234.47	122.83
2009-10	218.11	121.33
2010-11	244.49	126.67
2011-12	259.28	124.70
2012-13	257.13	120.70
2013-14	265.04	126.04
2014-15	252.0	122.00
2015-16	251.6	123.21
2016-17	275.68	128.02
2017-18	277.5 अनुमानित	_

स्रोत- भारत का आर्थिक सर्वक्षण 2007-2017. आर.बी.आई वेब साइट

पहली और दूसरी हरित क्रांति ने भारत में खाद्यान्न उपलब्धता पर काफी हद तक प्रभाव डाला है। 2001 में कुल खाद्यान्न अनाज उपलब्धता 196.87 मिट्रिक टन है। खराब मानसून ने वर्ष 2002-03, 04-05, और 2014-15में खाद्यान्न की उपलब्धता पर प्रतिकूल प्रभाव डाला बाद के वर्षो में खाद्यान्न अनाज उत्पादन की प्रवृत्ति धीरे-धीरे बढ़ी। वर्तमान वर्ष 2018 के अनुमान अनुसार कुल खाद्यान्न उपलब्धता 277.5 मीट्रिक टन होगा।इसका का मतलब है कि अध्ययन अवधि के दौरान शुद्ध खाद्यान्न उपलब्धता 81 मीट्रिक टन बढ़ी। भारत में खाद्यान्न उत्पादन के क्षेत्र में मामूली वृद्धि हुई है। भारत में कुल खाद्यान्न उत्पादन क्षेत्र के तहत केवल 6.63% क्षेत्र की वृद्धि हुई है। यह तथ्य कृषि क्षेत्र के विस्तार की आवश्यकता और अवसर का पता लगाता है।

कुल जोत की 85% छोटी और सीमांत जोत है जो भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने प्रमुख चुनौतियों में से एक है इसीलिए कृषि की व्यवहार्यता बढ़ाना आवश्यक है, जिसकी उपलब्धि अर्थव्यवस्था के विकास की संभावनाओं में काफी सुधार कर सकती है। फसल उत्पादन की स्थिरता और समय के साथ उत्पादन में वृद्धि वर्तमान परिप्रक्ष्य की आवश्यकता है अतः दीर्घकालिक खाद्य सुरक्षा का लक्ष्य तभी प्राप्त किया जा सकता है जब कृषि को कृषि नीतियों और कृषि संबंधी प्रथाओं में सुधार के माध्यम से सतत बनाया जाए। 2000 से 2018 के दौरान खाद्यान्न की उपलब्धता निम्न तालिका में दी है। प्रति वर्ष को किलो ग्राम से और प्रति दिन को ग्राम में प्रदर्शित किया है।

वर्ष	खाद्य अनाज (कि. ग्राम प्रति वर्ष)	खाद्य अनाज (ग्राम प्रति दिन)
2000	165.9	454.4
2001	151.9	416.2
2002	180.4	494.1
2003	159.7	437.6
2004	168.9	462.7
2005	154.2	422.4
2006	162.5	445.3
2007	161.6	442.8
2008	159.2	436.0
2009	162.1	444.0
2010	159.5	437.1
2011	170.9	468.8
2012	169.3	463.8
2013	179.5	491.9
2014	178.6	489.3
2015	169.8	465.1
2016	177.7	486.8
2017	178.4	488.7
2018	176.8	484.3

स्रोत- एक नजर में कृषि सांख्यकीय-2018

वर्तमान तालिका संख्या के परिणाम से पता चलता है कि 2000 से 2018 की अवधि के दौरान भारत में खाद्यान्न उपलब्धता में 6.16% की वृद्धि हुई है। खाद्यान्न की प्रति वर्ष कि.ग्राम की उच्चतम उपलब्धता वर्ष 2002 में और निम्नतम उपलब्धता 2001 में रही। वर्तमान वर्ष में खाद्यान्न उपलब्धता 176.8 कि.ग्राम है। यह अध्यनन अवधि (2000-2018) भारत में खाद्यान्न उपलब्धता में कम वृद्धि दर्शा रही है। 2000 से 2018 की अध्ययन अवधि के दोरान खादन्न की उप्लव्धता में ग्राम प्रति दिन 8.11% की वृद्धि हुए है। यह दोनों संकेतक वास्तविकता का पता लगाते हैं कि उत्पादन लक्ष्य का विस्तार होना चाहिए और भारत के समुदाय के लिए खाद्यान्न की उपलब्धता में सतत वृद्धि होनी चाहिए।

भारतीय कृषि के सामने चुनौतियों

कृषि क्षेत्र आर्थिक, पर्यावरण और सामाजिक रूप से सबसे अधिक जोखिम वाला क्षेत्र है। भारतीय कृषि क्षेत्र ने विभिन्न पारंपरिक चुनौतियों का सामना करने के साथ-साथ नई वैश्विक चुनौतियों का सामना किया। जो निम्न है-

- सतत कृषि के लिए पारिस्थितिक नींव का संरक्षण और संवर्द्धन करना आवश्यक है, जिसमें भूमि, जल, जैव विविधता और समुद्री संसाधन शामिल हैं। नगरीकरण और गैर कृषि भूमि उपयोग प्रतिरूप कृषि के समक्ष गंभीर चुनौतिया प्रस्तुत कर देते है।

- भारत में 85% किसानों के पास छोटे आकार की भूमि है, अर्थात वो सीमांत जोत रखते है। जिस कारण वे आर्थिक रूप से मजबूत नहीं हैं और बाजार में कम विश्वास रखते है।

- लघु और सीमांत किसान की कृषि से होने वाली शुद्ध आय काफी कम है या कभी-कभी यह नकारात्मक हो जाती है इसका कारण कृषि क्षेत्र में उत्पादन लागत में वृद्धी है।

- कृषि क्षेत्र में निजी क्षेत्र के निवेश का योगदान काफी कम है और 2000 के बाद कृषि में सार्वजनिक निवेश की प्रवृत्ति में गिरावट आई है।

- देश में प्रमुख फसलो की प्रति हेक्टेयर कृषि उत्पादकता बहुत कम है जिससे कुल कृषि उत्पादन कम होता है। जो किसानों की आय में बाधक है।

भारतीय कृषि के सामने सम्भावनाये या अवसर

भारतीय कृषि क्षेत्र में उच्च और समावेशी विकास सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित प्रमुख सुझाव-

- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कृषि उत्पादकता बढ़ाना एक महत्वपूर्ण चुनौती है। उत्पादन बढ़ाने के लिए, उपज अंतराल में मौजूदा क्षमता का दोहन एक अच्छा अवसर प्रदान करता है।

- वर्षा आधारित क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ाने और कृषि आय बढ़ाने की बहुत बड़ी संभावना है। इन संभावित क्षेत्रों को जल्द ही दूसरी हरित क्रांति के लिए हरा बनाया जा सकता है।

- कृषि उत्पादन और किसान की आय बढ़ाने के लिए किसानों को बाजारों से जोड़ना एक पूर्व-आवश्यकता है। उभरते हुए अवसरों के लाभों को प्राप्त करने के लिए इस संदर्भ में नवाचार संस्थानों की भूमिका महत्वपूर्ण होगी।

- गैर-हरित क्रांतियों वाले क्षेत्रों में, विशेष रूप से पूर्वी और उत्तर पूर्वी भारत में, जहां कृषि वृद्धि की बहुत संभावना है, सार्वजनिक और निजी संस्थानों द्वारा कृषि क्षेत्र में पूंजी निवेश का विस्तार करने की सख्त आवश्यकता है।

- कृषि का वैश्वीकरण कृषि उत्पादन और निर्यात को बढ़ाने के लिए बड़े अवसर पैदा कर सकता है।

निष्कर्ष

संक्षेप में, भारतीय कृषि की वर्तमान स्थिति पर संक्षिप्त चर्चा के बाद, प्रमुख चुनौती कृषि की सतता को सुरक्षित करना है। वैश्विक उष्मन और जलवायु परिवर्तन ने भारत में समग्र कृषि उत्पादकता और उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव डालें हैं। खाद्य अनाज और कच्ची सामग्रियों की भविष्य की मांग कृषि क्षेत्र से संतुष्ट नहीं होगी। कृषि से कम उत्पादन और मांग में विस्तार भारत में कृषि उत्पादन और खाद्य मुद्रास्फीति पर दबाव का निर्माण करते हैं। दूसरी ओर सीमांत किसानों के कृषि उत्पादन,

www.ignited.in

उत्पादकता और लाभ में गिरावट आई है अर्थात उनके उत्पादों को लागत की तुलना में उचित दामों की प्राप्ति नही हुए है। उस आधार पर सतत कृषि विकास ही इस समस्या को दूर करने का एकमात्र तरीका है।

संदर्भ सूची-

बालकृष्णन, पी. (2000) “Agriculture and Economic Reforms: Growth and welfare”, Economic and political Weekly, March 4-10.

बार्नेट, वी., पेयनेर, आर., और स्टेनिर, आर. (2008) Government of india, Agriculture Statistics at a Glace. Directorate of Economics and Statistics.

ग्रीनपीस इण्डिया, (2007), “Hiding Behind the Poor”, Bangalore. www.Greenpeace .org.in

कोहली, के., मीनन, एम., दास, एस., बादामी, डी., (2009) Calling the bluff: Revealing the State of Monitoring and Compliance of Environmental Clearance समनतरेय,एल. (2015) “A Study On the Current Trend of Agriculture Productivity in India and its Future Prospects.”

IJHSSE, “मिनिस्ट्री ऑफ़ एग्रीकल्चर (2000), नेशनल एग्रीकल्चर पालिसी।”

नाबार्ड वार्षिक रिपोर्ट 2012 से 2017

आर.बी.आई. वेबसाइट www.rbi.in

भारत का आर्थिक सर्वेक्षण 2014-15, 2015-16, 2016-17, और 2017-18

www.agriculture.gov.

Corresponding Author

Kavita Tomar*

Research (Geography), School of Social Science, Devi Ahilya World University

tomarkavita517@gmail.com